

# स्वविजयी ही रहें...

हम सभी ने नवरात्र मनाया, विजयदशमी मनाई और दीपावली भी मना ली। ये त्योहारों का एक लम्बा सिलसिला चला, लेकिन क्या इन त्योहारों के माध्यम से हमारे जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि, प्रेम का सिलसिला शुरू हुआ जिस मकसद से हमने ये त्योहार मनाया, क्या हम उन त्योहारों के मर्म को अपने जीवन से जोड़ पाये, क्या ये हमारे जीवन में कुछ उपयोगी सिद्ध हुई? चलो इसपर कुछ विचार कर लेते हैं...

नवरात्र की नौ रातें हमें जगाती हैं, हमारी आसुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करके हमें सद्गुणों की सम्पदा देती हैं, ताकि हम स्वयं को जान सकें, मन पर विजय प्राप्त कर सकें। ये नौ रातें पूरा जीवन बदल सकती हैं।

ईश्वर का स्त्री स्वरूप देवी है। उनकी पूजा दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती जैसे विभिन्न रूपों में होती है। नवरात्र देवी आराधना का पर्व है, जिसकी पहली तीन रात्रियां देवी दुर्गा को समर्पित हैं। उसके बाद के तीन रातों में लक्ष्मी की स्तुति होती है और अंतिम तीन में सरस्वती की। इसके बाद का दसवां दिन विजयादशमी कहलाता है।

## दुर्गा दुर्गति हरिणी

महान सद्गुणों को प्राप्त करने के लिए पहले मन की सारी आसुरी शक्तियों का ध्वंस करना पड़ता है। इस ध्वंस का प्रतिनिधित्व करती हैं दुर्गा। दुर्गा दुर्गति हरिणी। वे महिषासुर मर्दिनी भी कहलाती हैं। महिष, यानी भैंस। क्या हमारे मन में भी हरदम एक भैंस का अस्तित्व नहीं होता? भैंस आलस्य, अंधकार, जहालत और जड़ता-निष्क्रियता जैसे तमोगुणों की प्रतीक है, जो हमारे भीतर भी होते हैं। हमारे भीतर अपार ऊर्जा और सम्भावनाएं हैं, पर हम कुछ नहीं करते, जैसे भैंस की चड़-पानी में पड़ी रहती है, ऐसे दुर्गुणों का नाश बहुत कठिन होता है। दुर्गा की आराधना के माध्यम से हम अपने भीतर की दैवीय शक्ति को जगाकर पाशविक वृत्तियों को नष्ट कर सकते हैं।

## लक्ष्मी से सच्ची सम्पदा

आत्मजागृति के लिए हमारा मन तैयार होना चाहिए। मन पवित्र, केन्द्रित और लक्षित होना चाहिए। मन का यह शुद्धिकरण देवी लक्ष्मी

की सहायता से सम्भव है। आज के युग में हम लक्ष्मी का अर्थ धन और भौतिक सम्पदा से लगाते हैं। धन-सम्पत्ति की कामना से ही हर कोई लक्ष्मी-पूजा करना चाहता है, लेकिन वास्तविक सम्पदा क्या है? अगर हमारे पास भौतिक सम्पत्तियाँ हैं, लेकिन आत्म-अनुशासन या आत्म-नियंत्रण नहीं है, न ही प्रेम, दयालुता, आदर, गाम्भीर्य जैसे नैतिक मूल्य हैं, तो हमारी सारी सम्पदा खो जाएगी या नष्ट हो जाएगी। असली सम्पदा भीतरी होती है। ये आंतरिक सद्गुण ही हैं जो हमारी भौतिक सम्पत्तियों को संरक्षित करते हैं और उनका अच्छा इस्तेमाल सुनिश्चित करते हैं। अन्यथा धन खुद में एक समस्या बन जाता है। उपनिषदों में ऋषियों ने कभी भी केवल भौतिक सम्पदा की कामना नहीं की है। तैत्तरीय उपनिषद में वे आह्वान करते हैं कि पहले हम उच्च गुण विकसित करें, फिर हे ईश्वर हमें धन-सम्पदा दो। हमारे सद्गुण ही हमारी वास्तविक दौलत हैं। आद्य शंकराचार्य ने 'विवेक चूडामणि' में इन छह सम्पत्तियों की व्याख्या की है - मन की शांति, स्वनियंत्रण, आत्म-त्याग, सहिष्णुता, आस्था और एक लक्ष्य-केन्द्रिकता।

ये गुण आवश्यक हैं, क्योंकि हमारा परम लक्ष्य मन पर विजय प्राप्त करना है, ताकि हम जीवन में आने वाले हर छोटे-बड़े परिवर्तन से प्रभावित न हों। यह विजय तभी मिलती है, जब मन तैयार हो। और लक्ष्मी पूजा इसी मानसिक तैयारी का प्रतीक है।

## सरस्वती से स्व का ज्ञान

मन पर विजय की प्राप्ति केवल ज्ञान और समझ के ज़रिए ही सम्भव है। और माँ सरस्वती स्व के सर्वोच्च ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती हैं। हालांकि वेदों में धनुर्विद्या, वास्तुविद्या, अर्थशास्त्र, अंतरिक्ष विज्ञान जैसे बहुत सारे ज्ञान का वर्णन है, लेकिन

वास्तविक ज्ञान होता है आध्यात्मिक ज्ञान। भगवान ने गीता में कहा भी है कि स्वयं का ज्ञान ही ज्ञान है। तात्पर्य यह है कि हमें कई शास्त्रों और विज्ञानों का ज्ञान हो सकता है, लेकिन यदि हमें स्व का ही ज्ञान नहीं है, तो यह हमारा सबसे बड़ा नुकसान है। इस सर्वोच्च ज्ञान की प्रतिनिधि हैं देवी



सरस्वती।

## फिर विजयोत्सव का दिन

इस तरह, नवरात्र में सबसे पहले देवी दुर्गा का आह्वान किया जाता है कि वे हमारे मन की अशुद्धियों को दूर करें। देवी लक्ष्मी का आह्वान महान गुणों और योग्यताओं के लिए किया जाता है और अंत में स्व के सर्वोच्च ज्ञान के लिए सरस्वती का आह्वान होता है। इस तरह यह तीन-तीन रात्रियों के तीन चरणों का महत्व है, जिसके बाद आती है विजयादशमी, यानी विजय का दिन। विजय का उत्सव।

## नवरात्रियां क्यों?

नवरात्र के पर्व में दिन के बजाय रात्रियां क्यों जुड़ी हैं? आमतौर पर रात वह समय है, जब हम सोने जाते हैं, इसलिए आध्यात्मिक संदेश है कि तुम तमोगुणी अज्ञानता के उन्नीदेपन में खूब जी लिए। अब समय जागने का है। उठो, जागो।

## नृत्य क्यों?

नवरात्र में रास गरबा की परम्परा भी है। स्वाभाविक है कि जब हमारा मन अधिक पवित्र, शांत व प्रफुल्लित हो जाता है और हम आत्मबोध अर्जित कर लेते हैं, तो हम प्रसन्न महसूस करते हैं। रास नृत्य भी आनंद और आत्मबोध का नृत्य है।

- ब्र.कु. सौम्या, मुम्बई

## वर्ग पहेली 4 का उत्तर

| ऊपर से नीचे | बायें से दायें |
|-------------|----------------|
| 1. राजाई    | 1. राहत        |
| 2. हल       | 3. आज          |
| 3. आझा      | 5. जमा         |
| 4. जनक      | 7. जाल         |
| 5. जग       | 8. अज्ञान      |
| 6. मान शान  | 9. गगन         |
| 8. अमानत    | 10. रमा        |
| 9. गरम      | 11. कमर        |
| 10. रज      | 13. भजन        |
| 12. मगर     | 14. गमगीन      |
| 13. भगवान   | 16. तकदीर      |
| 15. गीत     | 19. वादा       |
| 17. कस      | 21. सदा        |
| 18. दीदार   | 23. शानदार     |
| 20. दादा    | 25. रमणीकता    |
| 22. गुणी    | 27. तन         |
| 24. रत      | 29. दुआ        |
| 26. ताकत    | 31. जमींदार    |
| 28. नज़र    | 34. समाचार     |
| 30. आस      | 35. मज़ार      |
| 32. दाम     |                |
| 33. रज़ा    |                |

## ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली के उत्तर

### वर्ग पहेली 5 का उत्तर

| ऊपर से नीचे   | बायें से दायें |
|---------------|----------------|
| 1. विनाश      | 1. विलायत      |
| 2. यज्ञ       | 3. सजा         |
| 3. सबक        | 5. बरसात       |
| 4. जार        | 8. शब्द        |
| 6. साहस       | 9. अनेक        |
| 7. तबला       | 11. हबच        |
| 10. नेति नेति | 13. सलाह       |
| 12. चहल पहल   | 14. ममता       |
| 15. महाप्रलय  | 17. तिनका      |
| 16. कनक       | 18. पाप        |
| 18. पालनहार   | 19. प्रकार     |
| 22. सतह       | 20. कलह        |
| 23. निरोगी    | 21. भील        |
| 26. वस        | 24. नल         |
|               | 25. यथावत      |
|               | 27. सहयोगी     |
|               | 28. रब         |

### वर्ग पहेली 6 का उत्तर

| ऊपर से नीचे   | बायें से दायें |
|---------------|----------------|
| 1. भाग्य- वि- | 1. भागीरथ      |
| धाता          | 3. समीपता      |
| 2. थकना       | 5. कलाकार      |
| 3. सर         | 8. विघ्न-      |
| 4. परवाना     | विनाशक         |
| 6. लाश        | 9. रवाना       |
| 7. काक        | 12. नाम        |
| 10. नामधारी   | 13. तावीज़     |
| 11. सपूत      | 16. पूरा       |
| 14. वीर       | 18. रबड़       |
| 15. जबरदस्त   | 19. सतह        |
| 17. राह       | 21. दमकल       |
| 19. सकल       | 23. रमण        |
| 20. रमणीक     | 24. मस्त       |
| 22. कमल       | 26. रात        |
| 24. मत        | 27. ललकार      |
| 25. नीर       | 28. कर्ण       |

## वर्ग पहेली 7 का उत्तर

| ऊपर से नीचे | बायें से दायें |
|-------------|----------------|
| 1. सजनिया   | 1. सम्बन्ध     |
| 2. शुकिया   | 2. शुद्ध       |
| 3. गुनाह    | 3. गुल         |
| 6. गीता     | 4. स्थापना     |
| 7. काज      | 5. निरोगी काया |
| 9. मधुवन    | 8. हम          |
| 11. मेहनत   | 10. ताज        |
| 12. मामकम   | 13. सहज        |
| 13. सत      | 14. कब         |
| 14. कहानी   | 15. त्वमेव     |
| 15. त्वचा   | 17. तन         |
| 16. वर      | 18. जहान       |
| 18. ज़रा    | 19. चाकर       |
| 21. फालतू   | 20. रानी       |
| 22. अन्धा   | 25. फल         |
| 23. लगाव    | 26. धन्धा      |
| 24. रस      | 27. सर्व       |
| 26. धन      | 28. तूफान      |
|             | 29. तनाव       |



**मथुरा।** उत्तर प्रदेश के मानव संसाधन राज्यमंत्री माननीय डॉ. रामशंकर कटारिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम।



**दुंगरपुर-राज.।** 'आध्यात्मिक शक्ति द्वारा व्यापार में सफलता एवं शुद्धता' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् माउण्ट आबू से आयी बिजनेस एंड इंडस्ट्री विंग की मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. गीता को शॉल ओढ़ाकर व सौगात देकर सम्मानित करते हुए बार ऑफ कॉमर्स की ओर से के.के. गुप्ता, प्रभुलाल पटेल, शंकर सोलंकी व अन्य गणमान्य जन। साथ हैं ब्र.कु. विजयलक्ष्मी।



**उदयपुर-राज.।** द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 'बुमेन ऑफ ससेटन्स' कार्यक्रम के दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए डॉ. अरविंदर सिंह, अर्थ डायरेक्टर। साथ हैं डॉ. नितिज मुरडिया, डायरेक्टर, इंदिरा आई.वी.एफ. हॉस्पिटल व परमजीत कौर, डिप्टी जी.एम., एस.बी.बी.जे.।



**जयपुर-वापूनगर।** हिन्दु सीरिच्युअल फेयर में आध्यात्मिक ज्ञान देने के पश्चात् चित्र में वाइस चांसलर प्रो. त्रिवेदी, ब्र.कु. जयती, ब्र.कु. पदमा व अन्य।



**शिलाँग-मेघालय।** स्टेट बैंक ट्रेनिंग सेंटर, लबन में 'मेडिटेशन फॉर स्ट्रेस फ्री लाइफ' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ऑफिसर्स, ब्रांच मैनेजर्स, जी.एम., ए.जी.एम. ब्र.कु. नीलम व ब्र.कु. डॉ. धवल सूद।



**सुल्तानपुर-उ.प्र.।** 'लाइफ स्किल एज्युकेशन कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जेल अधीक्षक पी.के. शुक्ला, प्रतापगढ़ के एडीशनल सी.एम.ओ. डॉ. पी.पी. पाण्डेय, ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. सरिता व अन्य।